DOI: 10.51220/hjssh.v7i1.12

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 7 pp.87 - 92, December, 2012, ISSN. 0975 - 9891

अमृतलाल नागर के प्रमुख उपन्यासों में दलित चेतना

गोपाल कृष्ण पाण्डेय
हिन्दी विभाग,
हे0न0ब0 वि0वि0 (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) परिसर पौड़ी गढ़वाल उत्तराखण्ड

Received: 2.10. 2012 **Revised: 10.11. 2012** **Accepted: 30.11.2012**

ABSTRACT

किसी समाज की प्रगतिशिलता उसकी शिक्षा पर तथा उसका अस्तित्व उसके साहित्य पर निर्भर करता है। साहित्य ही समाज को सचेत और सक्रिय रखता है तथा उसे प्रेरणा और दिशा भी देता है। साहित्य से समाज को ऊर्जा और ताकत मिलती है। साहित्य के अभाव में किसी भी समाज की पहचान और अस्तित्व संकटग्रस्त रहता है। बौद्ध धर्म का ज्वलंत उदाहरण हमारे सामने है। भारत से बौद्ध धर्म के उच्छिन्न होने का प्रमुख कारण यही था कि उसका साहित्य नष्ट हो गया था। 'मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है' यह शब्द निरर्थक नहीं है। दलित समाज सदियों से इसीलिए शोषित, उपेक्षित और पिछड़ा रहा क्योंकि उसके पास प्रेरणा और दिशा देने वाला साहित्य नहीं था। पिछले दो दशकों से जिस तेजी से दलित साहित्य ने हलचल पैदा की है उससे समाज में दलित चेतना बढ़ने की सम्भावना बलवती होती है।

KEY WORDS; अमृतलाल नागर, प्रमुख उपन्यास, 'महाकाल','बूँद और समुद्र','बिखरे तिनके', 'नाच्यौ बहुत गोपाल', 'सुहाग के नूपुर', दलित चेतना

अमृतलाल नागर जी का जन्म 17 अगस्त 1916 ई0 को आगरा के गोकुल पुरा मोहल्ले में हुआ। इनका परिवार मूलत: गुजराती था, जो लगभग 250 वर्ष पूर्व से उत्तर प्रदेश में आकर बस गया। यही कारण रहा कि इनका गुजराती और हिन्दी भाषा पर समान अधिकार था। साहित्य-सृजन के संदर्भ में इन्होंने विविध विधाओं में लेखनी चलायी है परन्तु इन्हें जो ख्याति मिली है उसका कारण इनके उपन्यास ही हैं।

अमृतलाल प्रेमचन्द परम्परा के अग्रणीय कथाकार हैं। प्रेमचन्द सामाजिक जीवन के यथार्थ रचनाकार हैं। जिनके कथा साहित्य में अपने युग की विभीषिका चित्रित हुई है। नागरजी के उपन्यास भी युग चेतना के संवाहक हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि इनके उपन्यासों में युग बोल रहा है। इनके प्रमुख उपन्यास हैं-'महाकाल', 'बूँद और समुद्र', 'बिखरे तिनके', 'अग्नि गर्भा', 'मानस का अंश', 'खंजन नयन', 'शतरंज के मोहरे', 'करवट', 'नाच्यौ बहुत गोपाल', 'एकदा नेमिसारण्यें' तथा 'सुहाग के नूपुर', जिनमें समाज, वर्ग, वर्ण और अन्य सांस्कृतिक परम्पराओं का जीवन्त चित्रण मिलता है।

2. ऐसी पर्याप्त साहित्यिक रचनायें उपलब्ध हैं जिनका उद्देश्य दलित, शोषित और उपेक्षित वर्ग के शोषण और अन्याय के विरूद्ध जन चेतना जागृत करके उनके अधिकारों की लड़ाई लड़ना है। यही कारण है कि प्रेम चन्द से लेकर आगामी काल तक के यथार्थवादी साहित्य में दलित वर्ग के प्रति सहानुभूति दिखाई देती है। अपने

©SHARAD

साहित्य के माध्यम से दलित समाज के उत्थान हेतु प्रयास किया है।

नागर जी के उपन्यासों में दलित चेतना का स्वरूप

नागर जी ने अपने उपन्यास **'नाच्यौ बहुत गोपाल'** में सदियों से अत्याचारित वर्ग की पीड़ा को साकार करते हुए समाज के मूल्यों से त्रस्त दलित जाति की मुक्ति के लिए आवाज उठाई है। इन्होंने अपने उपन्यासों में हमें यह बताने का प्रयास किया है कि ''दलित'' कोई अस्पृश्य, हरिजन या निम्न जाति नहीं है बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए शोषित व पीड़ित लोग हैं चाहे वह किसी भी जाति के हों, वे दलित के अन्तर्गत ही आते हैं यहाँ तक कि शोषित नारी भी दलित वर्ग के अन्तर्गत आती है। नागर जी ने अपने उपन्यासों में दलित चेतना को कहीं पात्रों के माध्यम से तो कही जाति व वर्ग-व्यवस्था के प्रति विद्रोह उत्पन्न करके दलित पात्रों का वर्णन किया है।

पात्रों द्वारा अभिव्यक्त दलित चेतना

निर्गुणियाँ नागर जी के क्रान्तिकारी उपन्यास **''नाच्यौ बहुत गोपाल''** की एक नायिका है। जन्म से ब्राह्मण निर्गुणियाँ बाद में मेहतर बन जाती है। मेहतर बनने के पीछे मात्र निर्गुणियाँ ही जिम्मेदार नहीं है उसके जीवन की परिस्थितियाँ भी उतनी ही जिम्मेदार हैं। संस्कारी नाना-नानी के घर अपना बचपन बिताकर भी यौवन के पहले अहसास में ही नैतिकता के कच्चे धागों को तोड़ बैठती है। हवेली के सेठ-सेठानी की रंग-रेलियां में उसका किशोर सौन्दर्य पीसकर बरबस एक वृद्ध मसुरीयादीन के गले मढ़ दिया जाता है। वृद्ध मसुरीयादीन के यहाँ सारे वैभव थे, पर नारी को जिस प्रकार के पति के वैभव की आवश्यकता होती है, वह वहाँ नहीं था। शरीर सुख पाने की कामना में युवा मेहतर मोहना के साथ भाग जाती है और जैसे तैसे करके उसके साथ मेहतरानी बनने को तैयार हो जाती है बस यहीं से वर्ण-व्यवस्था की खोखली दीवारों को पहला जबरदस्त धक्का लगता है और फिर शुरु होती है ब्राह्मणी की मेहतरानी बनने की प्रक्रिया। घर से भागी हुई ब्याहता ब्राह्मणी अछूत समाज में भी आदर के योग्य नहीं है। भारतीय समाज के पारम्परिक सास-ससुर, पुरुष की पाशविक वृत्ति की शिकार बनी नारी पुरुष की भोग्या और घर की दासी जैसी ही पीड़ा भुगतती हुई निर्गुणियाँ अपने ही अपराध के कारण जड़ बन जाती है। 'अपने जोबन की दुकान खोलकर' मेहतर पुरुष को रिझाने वाली अतृप्त नारी नैसर्गिक कामनाओं की तृप्ति पाकर भी मन, बुद्धि और प्राणों में मेहतरानी बनने की कल्पना से ही मूक हो जाती है। मोहन से विवाह के बाद उसकी माँ उसे पाखाना साफ करने का आदेश देती है। पहले तो उसके ब्राह्मण संस्कार आड़े आता है, लेकिन अंततः स्वीकार कर लेती है। निर्गुणियॉ के जीवन के अनुभव विकट हैं, उसने ब्राह्मण संस्कार भी देखे हैं और कुसंस्कार भी जाति के सम्बन्ध में पूछने पर कहती है-''मेरी जात तो कामदेव की ज्वाला में भस्म हो गई शर्माजी, मैंने छोड़ी कहॉ ? वह तो अपने आप छूट गई। आपके यहाँ ऊँची जात वाले पुरुष लोग तो साले दिन में पचास-पचास बार अपनी जात छोड़ते रहते हैं। कहीं औरतों पर मुँह मारते हैं और कहीं उनकी गाढ़ी कमाई के पैसों पर। जिसका धर्म-ईमान कायम नहीं उसकी जात भला कैसे कायम रह सकती है? चाहे वह नाम का हिन्दू हो या मुसलमान या क्रिश्चन, कोई भी हो साला।''[1] यौन-शोषण की विभीषिका से गुजर चुकी निर्गुणियॉ ब्राह्मणों के धूर्त व्यवहार का पर्दाफाश करती हुई कहती हैं-''बड़े-बड़े त्रिपुंडधारी पंडितों को भी मैंने अछूत स्त्रियों के पीछे-पीछे कुत्ते की तरह घूमते देखा है। लुक-छिपकर मुँह काला करने के बाद उजागर में मूंछों पर ताव दे के 'हटो-बचो' चिल्लाना शुरू कर देते

हैं।''[2]

निर्गुणियाँ संस्कारों से मेहतरानी बनकर भी अपने पति मोहन के प्रति एकनिष्ठ प्रेम भाव रखती है। जब मोहन उसे अपने घर की प्रताड़नाओं से निकालकर अंग्रेज कप्तान की कोठी में ले जाता है और घटना चक्रवश व कप्तान के माशूक की हत्या कर डाकुओं के गिरोह में मिल जाता है, तब उसे सास-ससुर के द्वारा परित्यक्त, जीवन जीने के लिए मजबूर कर दिया जाता है, जिसके कारण व गॉव के ही वृद्ध मसीताराम के घर में शरण लेती हैं। यहाँ भी डाकू बने मोहना के कारण पुलिस, और समाज के आस-पास के लोग भी उसका बार-बार उत्पीड़न करते हैं। अपने दुख व पीड़ा को हल्का करने के लिए आर्य समाज में आती है, अपने घर पाठशाला चलाती है और मैला भी ढ़ोती है तथा एक पुत्री की मॉ भी बन जाती है। इसके बावजूद भी निर्गुणियॉ एक पूर्ण मेहतरानी की तरह काम करती है। वह बड़े आत्मविश्वास के साथ सबसे कहती है-''कि मैंने कोई पाप नहीं किया है, यह मेरी बेटी पाप की नहीं, अपने बाप की है और अब तो सारी दुनिया यह जान गयी है कि निर्गुणियॉ पंडिताईन निर्गुणियॉ मेहतरानी बन गई है।''[3]

इधर मोहन उसे मेहतर का कार्य करने के लिए मना करता है तब वह करती है-देख रे मोहना! तेरे मोह में मैं मेहतरानी तो बन गई हूँ, पर रंडी किसी कीमत पर नहीं बनूंगी। क्योंकि मेहतरानी की अपनी मरजाद होती है।''[4] अपने इन कठिन परिस्थियों में भी निर्गुणियॉ अपने बच्चों का पालन-पोषण अनेक संघर्षों का सामना करके करती है। इन संघर्ष के दिनों में वह अपने बेटे निर्गुण मोहन को पढ़ाकर प्रेस इन्फार्मेशन अधिकारी बनाती है, और क्रिश्चियन लड़की नीलम को शुद्ध करके अपनी पुत्रवधू बनाती है, तथा अपनी बेटी शकुन्तला को पढ़ा-लिखाकर चर्च मिशन कालेज की प्रिन्सिपल बना देती है। अपने मुहल्ले में वह एक पाठशाला चलाती है और वह चाहती है कि उसके मुहल्ले के बच्चे मैला साफ करने के बजाय पढ़-लिखकर कुछ सम्मानजनक कार्य करें। वह अपने अनुभव के आधार पर कहती है कि-''मैंने तो नसी की मार से मेहतरानी बनके ये सीखा की दुनिया में दो पुराने गुलाम हैं-एक भंगी और दूसरी औरत। जब तक ये गुलाम हैं आपकी आजादी रूपये में पूरे सौ के सौ नये पैसे झूठी है।''[5]

वह आगे भी समाज में बड़े आत्मविश्वास के साथ कहती है-कि दुनिया में दूर-दूर देशों तक औरत से बढ़कर कोई भी ज्यादा गुलाम नहीं है। मैंने ब्राह्मण भी देखा, मेहतर भी देखा। मरद सब जगह एक हैं। सासें भी सब जगह एक हैं, सब जगह औरत की एक जैसी ही मिट्टी पलीत होती है। मैंने दलितों की समस्या को दोहरे ढंग से भोगा है।''[6] समाज के उच्च वर्ग ब्राह्मण और निम्न वर्ग मेहतर दोनों को निकट से देख चुकी निर्गुणियॉ सवर्ण समाज व्यवस्था पर सचेत हमला करती है। वह सीधा प्रतिरोध करती है और अपने मूल वर्ग चरित्र की हीनता, पाखण्ड की धज्जियॉ उड़ाती है।

नागरती ने भी निर्गुणियॉ के माध्यम से नारी समाज़ की त्रासदी, दलित समाज के शोषण और उच्च वर्ग के पाखण्ड का पर्दाफाश किया है।

'शतरंज के मोहरे' उपन्यास में भुलनी एक मुख्य नारी चरित्र है जो जाति से हरिजन है और अपनी माँ के साथ नील कोठी में काम करती है। वह निम्न कुल में जन्म लेकर भी बहुत सुन्दर थी। उसकी मॉ उसे हरदम बचाव और निगरानी के साथ रखती थी। वह बड़े साहब की कोठी में सफाई का काम करती थी। कोठी का मक्कार बड़ा मुनीम स्मिथ बहुत दिनों से इस लड़की को अपनी वासना का शिकार बनाने के लिए

सन्दर्भ सूची

1. 'नाच्यौ बहुत गोपाल', अमृतलाल नागर, पृ0 225
2. वही, पृ0 17
3. वही, पृ0 263
4. वही, पृ0 333
5. वही, पृ0 343
6. वही, पृ0 229
7. 'शतरंज के मोहरे', अमृतलाल नागर, पृ0 225
8. वही, पृ0 123
9. वही, पृ0 115
10. 'अमृतलाल नागर के उपन्यासों में सामाजिक चेतना', डॉ0 शोभा पालीवाल, पृ0 72
11. 'बिखरे तिनके', अमृतलाल नागर, पृ0 41
12. वही, पष्ट0 61